फरीदाबाद

मजदूर समाचार

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.
फरीदाबाद – 121001

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 269 | 1/– | नवम्बर 2010

रुपये का उत्पादन और वितरण

मण्डी में रचे-बसे पैसे के जन्म की चर्चा हम यहाँ नहीं करेंगे। कौड़ी, धेला, टका, रुपया, मोहर, दीनार, पाउँड, डॉलर, येन, युआन, यूरो, धातु-कागज-इलेक्ट्रोनिक मनी....., मुद्रा के रूप और रूपान्तरण की बातें भी हम यहाँ नहीं करेंगे। मुद्रा की ढलाई-छपाई यहाँ विषय-वस्तु नहीं है।

दस्तकारी-किसानी उत्पादन से जुड़े रुपये की चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। ऋण-सूद-सट्टा बाजार और व्यापार के माध्यम से होते रुपये के वितरण की बातें भी यहाँ नहीं करेंगे। हम अपने को यहाँ फैक्ट्रियों में होते रुपये के "उत्पादन" और उसके वितरण के दायरे में सीमित रखेंगे।

फैक्ट्रियों में कपड़े, साइकिल-बाइक-कार-ट्रक, रेडियो-टी वी, पैट्रोल-डीजल, जूते-चप्पल, बिजली उपकरण, बन्दूक-बम, रेल इंजन-डिब्बे, समुद्री जहाज-वायुयान, कम्प्युटर आदि-आदि के उत्पादन को यहाँ केन्द्र में रखेंगे। कपड़े, वाहन, जूते, टी वी, तोप, बल्ब, कम्प्युटर को रुपये के रूप में देख सकते हैं। विभिन्न प्रकार की फैक्ट्रियों में होते अनेकानेक प्रकार के उत्पादन को इतने-उतने रुपयों के उत्पादन के तौर पर देख सकते हैं।

कल-कारखानों की स्थापना और विस्तार की अभिव्यक्ति हैं : पैसा सब कुछ है..... पैसा सब कबाड़ा कर रहा है।

★ फैक्ट्रियों और फैक्ट्रियों में उत्पादन को अधिक समय नहीं हुआ है। दो सौ वर्ष पूर्व भाप-कोयला आधारित मशीनों ने कारखानों को स्थापित किया।

दस्तकार परिवार अपने भरण-पोषण के लिये आवश्यक से 15-20 प्रतिशत अधिक उत्पादन ही कर पाता था। टैक्स, सूदखोरी एवं व्यापार के माध्यम से इन 15-20 प्रतिशत से अधिक प्राप्त करना बहुत कठिन था। भाप-कोयले वाली मशीनों से उत्पादन की गति में तीव्र वृद्धि हुई। कारखाने में मजदूर की क्षमता अपने परिवार के भरण-पोषण के लिये आवश्यक उत्पादन से दुगुना उत्पादन की बनी। दस्तकार द्वारा दिन में 100 रुपये का उत्पादन तो फैक्ट्री में मजदूर द्वारा 200 रुपये का। दस्तकार के अपने औजार व अपना स्थान और कार्यावधि में फेर-बदल करने का अधिकार। पराई मशीनें, पराया स्थान, चारदीवारी में बन्द, समय निर्धारित और आदेश अनुसार काम ने कारखाना मजदूर के तन को तान कर, मन को दाब कर 200 की जगह 250 रुपये का काम करवाया। सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम ने गर्मियों के दिनों में मजदूर से 300-350 रुपये का काम करवाया। मजदूर से निचोड़े गये यह 100-150-200-250 रुपये कारखानेदार, व्यापरी, जमीन के मालिक और सरकार के बीच बँटते थे। अमीरों और गरीबों के बीच दूरी बढी और सरकार के थाना-जेल-अदालत-सेना-गोलाबारूद बढे।

★ पौ फटने से सूर्य डूबने तक काम। मशालों की रोशनी में कारखानों में काम नहीं हो सकता। रात सोने के लिये ही रही। इसलिये गति बढाने पर जोर। नई-नई मशीनें। भाप-कोयले की जगह पैट्रोल ईंधन-इंजन, बिजली। फैक्ट्रियों के आकार बढे, स्थापना-संचालन की लागत में भारी वृद्धि हुई। कारखाना मालिक खत्म हुये और उनके स्थान पर कम्पनियाँ बनीं। इस सब के कारण आज से सौ-सवा सौ साल पहले ही फैक्ट्रियों में मजदूर इतनी रफ्तार से काम करने लगे थे कि अपने भरण-पोषण के 100-200 रुपये के अतिरिक्त 1000-1500 रुपये प्रतिदिन पैदा करने लगे थे।

अपनी रेल बनाना सहज ही कोई स्वीकार नहीं करती-करता। मजदूरों के विरोध-विद्रोह बढे। कम्पनियों के बीच सहयोग और तकरार में वद्धि हुई। सरकारों के बीच तालमेल और शत्रुता बढी। मजदूरी प्रथा, फैक्ट्री पद्धति को बनाये रखने के लिये शस्त्रों और शास्त्रों को अधिक तीखा-पैना किया गया। सरकारों के पास पाँच-दस हजार सैनिकों वाली स्थाई सेना का युग समाप्त हुआ और 1890 में एक लाख की स्थाई फौज का डंका बजा। सरकारों का खर्चा इतना बढ गया कि कारखानों में मजदूरों से निचोड़े गये रुपयों के बड़े हिस्से को सरकारें टैक्सों के रूप में लेने लगी।

★ .....निर्माण, विनाश, नया निर्माण, नये सिरे से विनाश, वृहद् निमार्ण, वृहद नया विनाश..... यह इन दो सौ वर्ष की चारित्रिकता लगती है। युद्ध के लिये और युद्ध के दौरान उत्पादन की गति में तीव्र वृद्धि के लिये प्रयास एक विशेष श्रेणी का गठन करते हैं। इन सौ वर्षों में तो आविष्कार, अनुसन्धान, ज्ञान कुछ ज्यादा ही पगला गये हैं। बिजली का बड़े पैमाने पर उत्पादन फैक्ट्रियों में रात में भी काम करवाना लाया है। और इलेक्ट्रोनिक्स..... इलेक्ट्रोनिक्स हमें आज की फैक्ट्रियों में ले आया है। अन्तरिक्ष ज्ञान-विज्ञान-अनुसन्धान, नैनो टैक्नोलॉजी, बायोटैक्नोलॉजी की दस्तक गूँगे-बहरे बन, खुली आँखों से मृत्यु वरण को आमन्त्रण है.....

★ इलेक्ट्रोनिक्स के दबदबे में फैक्ट्रियों में रुपये का उत्पादन और वितरण हमें वर्तमान में ले आता है।

यह बातें चौंकाने वाली लग सकती हैं पर यह आधारित हैं कम्पनियों द्वारा स्वयं सार्वजनिक किये बही-खातों के अंशों पर।

आज फैक्ट्री मजदूर महीने में पाँच से पन्द्रह लाख रुपये का उत्पादन करता-करती है।

फैक्ट्रियों में किये जाते रुपये के इस उत्पादन का वितरण इस प्रकार है :

●अनेक प्रकार के टैक्सों द्वारा सरकारी खातों में लगभग पचास प्रतिशत हिस्सा जाता है। फैक्ट्री में एक मजदूर द्वारा पैदा किये ढाई से साढे सात लाख रुपये प्रतिमाह सरकारी खातों में पहुँचते हैं। एक मजदूर से एक महीने में ही इतनी राशि! आज सरकारें लाखों करोड़ रुपये इस प्रकार टैक्सों द्वारा एकत्र करती हैं। ढाई सौ वर्ष पूर्व हॉलैण्ड में अर्थशास्त्र के एक छात्र ने अनेक करों और कर चोरी की जटिल समस्या से पार पाने के लिये एक टैक्स का सुझाव दिया तो विद्वान आचार्य ने नादान छात्र को समझाया था कि सरकार की भारी लूट की जानकारी विद्रोह करवा देगी। ढाई सौ वर्ष पूर्व से लाखों गुणा राशि आज टैक्सों के जरिये एकत्र की जाती है। इसलिये आज भारत सरकार की ही तरह लाख सैनिकों वाली थल सेना है और फिर जल सेना, वायु सेना.... बी एस एफ, सी आर पी....राज्य पुलिस हैं। इस भारी टैक्स वसूली का एक परिणाम है हर क्षेत्र में आज सरकारों द्वारा हस्तक्षेप। जब कोई मन्त्री किसी व्यक्ति को दो-चार लाख अथवा किसी क्षेत्र को दो-चार करोड़ रुपये देने की बात करता है तब वास्तव में एक सौ ले कर एक देना वाली बात होती है।

●फैक्ट्रियों की स्थापना और संचालन में लगे पैसों का करीब 85 प्रतिशत आज बैंक-बीमा-वित्त संस्थाओं से कर्ज लिया होता है। मजदूरों द्वारा फैक्ट्री में पैदा किये रुपये का करीब 15 प्रतिशत इन ऋणदाताओं को ब्याज के रूप में दिया जाता है। फैक्ट्री में एक मजदूर द्वारा पैदा किये 75 हजार से सवा दो लाख रुपये प्रतिमाह ऋणदाता ब्याज में लेते हैं। बैंकों-वित्त संस्थाओं की आमदनी का प्रमुख स्रोत यह है। (बाकी पेज चार पर)

फरीदाबाद में मजदूर

पहली जुलाई 2010 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4348 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये), उच्च कुशल मजदूर 4998 रुपये (8 घण्टे के 192 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ

टालब्रोस इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 74-75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 80 स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 700 वरकर **एस्कोर्ट्स, मारुति सुजुकी, टाटा, आयशर** तथा निर्यात के लिये वाहनों के एक्सल बनाते हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, जबरन 24 घण्टे भी रोकते हैं, तबीयत खराब हो तब भी रोकते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे 700 मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4200 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। हाँ, कैन्टीन में थाली दो रुपये में है।"

निधि मैटल ऑटो कम्पोनेन्ट्स श्रमिक : "आर्य नगर, मिल्क प्लान्ट रोड़, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट में **हीरो होण्डा, सन्धार** आदि के लिये हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को 8 घण्टे काम। हैल्परों की तनखा 2800-3000 और ऑपरेटरों के 3000-3500-4500 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 40 की ही। गेट एक ही है, **राज कंवर इंजिनियरिंग** नाम से दूसरी कम्पनी भी दिखा रखी है।"

इन्टरनेशनल फोरजिंग कामगार : "प्लॉट 196 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 3500 और ऑपरेटर की 4000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। ई. एस.आई. 110 मजदूरों में 10 की ही है, पी.एफ. किसी मजदूर का नहीं। यहाँ **न्यू एलनबरी, वीनस** आदि का काम होता है। पानी खराब। शौचालय गन्दे। गाली बहुत देते हैं।"

शिवकाम फार्मा वरकर : "प्लॉट 51 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में मजदूरों की तनखा 1600-4500 रुपये। ड्युटी सुबह 9 से रात 9, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

शिवालिक प्रिन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 21 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जिन्हें चेक देते हैं उन्हें सितम्बर की तनखा 14-15 अक्टूबर को मिली। नकद वाले 40 को 18 अक्टूबर को पैसे दिये और रात में काम करते 20 को सितम्बर की तनखा आज 21 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

जगसन पाल फार्मास्युटिकल्स श्रमिक : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखी 10 महिला मजदूरों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई मजदूरों को दो वर्ष से वर्दी नहीं दी है।"

परफैक्ट पैक कामगार : "प्लॉट 134 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। महिला मजदूरों की ड्युटी दिन की और तनखा 3000 रुपये। पुरुष हैल्परों की तनखा 3200-3800 रुपये। दोनों की ही ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ओवर टाइम का भुगतान 15 रुपये प्रतिघण्टा। शौचालय गन्दे।"

उत्तम गैस वरकर : "प्लॉट 41 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट में मेडिकल सप्लाई के लिये ऑक्सीजन तथा नाइट्रस ऑक्साइड बनती हैं। शौचालय..... रात को बाहर जाते हैं, दिन में भी बाहर जाते हैं। पीने का पानी खारा। तनखा देरी से, सितम्बर की 15 अक्टूबर को दी। मजदूरों को बोनस नहीं, सवेतन छुट्टी नहीं। चोट लगने पर मजदूर स्वयं उपचार करवायें।"

एम जी शोनैक्स मजदूर : "20/6 मथुरा रोड़ पर भाटिया क्रेन वाली गली में स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पानी खारा। शौचालय गन्दा। गाली और मारपीट भी।"

बोनी रबड़ कामगार : "प्लॉट 9 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4214 रुपये देते हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा 22 सितम्बर को जा कर दी थी, सितम्बर का वेतन आज 15 अक्टूबर तक नहीं दिया है। गुड़ व साबुन देते थे वह भी देना बन्द कर दिया।"

एम एच टैक्सटाइल्स कामगार : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई-छपाई करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे काम पर 30 दिन के हैल्परों को 4000 तथा ऑपरेटरों को 6000-8000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों की ही हैं।"

कास्टमास्टर वरकर : "प्लॉट 46 व 64 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **टाटा मोटर** के इंजन के हिस्से-पुर्जों की ढलाई करते हैं। हैल्परों की तनखा 3700 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ऑपरेटरों की तनखा 4214 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

अनुरोध

आप रिटायर होनें पर **मजदूर समाचार तालमेल** के दायरे में मिलने-जुलने के स्थान के तौर पर अपने निवास के आसपास **बैठक** की स्थापना में रुचि रखते हैं तो कृपया हम से सम्पर्क करें। किसी की भी बैठक स्थापना में दिलचस्पी है तो कृपया मिलें।

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

वर्कशॉप वरकर

हनु इन्डस्ट्रीज मजदूर : " प्लॉट 152 हृदयकुण्ड कॉलोनी, मुजेसर स्थित वर्कशॉप में काम करते 20 मजदूरों की तनखा 3000-4300 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। यहाँ दो रबड़ मिक्सिंग रोलर, एक नीडर मशीन, 9 एक्सट्रुडर मशीन, एक बॉयलर, तीन भट्टियाँ तथा एक जनरेटर है। रबड़ व कार्बन का प्रयोग होता है, प्रदूषण बहुत है। ई.एस.आई. है। बोनस देते हैं।"

एक्मे ऑटो श्रमिक : "बड़खल गाँव, सैक्टर-49 स्थित वर्कशॉप में 150 मजदूर मोटरसाइकिल के एक्सल बनाते हैं। यहाँ 12-14 वर्ष आयु के बच्चे बड़ी सँख्या में काम करते हैं। बच्चों की तनखा 1000-1200 रुपये और बड़ों की 2500-3000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

बॉक्सर इण्डिया कामगार : " मिलहार्ड कॉलोनी, न्यू टाउन स्टेशन के पास स्थित वर्कशॉप में 9 मजदूर काम करते हैं। हैल्परों की तनखा 3000-3500 और ऑपरेटरों की 4000-4500 रुपये। ड्युटी सुबह 8½ से रात 7 की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एस बी इंजिनियरिंग वर्क्स वरकर : "पुराना सरकारी स्कूल, मुजेसर के पास स्थित वर्कशॉप में मात्र एक मजदूर है, तनखा 4000 रुपये। यहाँ दो लेथ, एक एम आई टी आर, एक ग्राइन्डर हैं। वर्कशॉप वाला स्वयं भी काम करता है।"

मिलने-जुड़ने के लिये बैठकें

- मैन-मस्तिष्क सुस्ताने के लिये
- कम रोक-टोक के लिये
- सहज जोड़ों के लिये
- असहायता से पार पाने के लिये

बस्तियों में बैठकों की स्थापना करना **मजदूर समाचार** तालमेल का एक प्रयास है। हर कोई इसमें साझीदार बन सकती-सकता है। कुछ बैठकें इन स्थानों पर हैं :

1. सी एन 49 पहली मंजिल (गोपाल ज्वैलर्स के सामने) अल्ला मोहल्ला, तेखण्ड – ओखला, दिल्ली। 2. वीरवार को गायकवाड़ नगर (फरीदाबाद न्यू टाउन स्टेशन के पास)।
3. रविवार को प्लॉट नं. 108, पुराने सरकारी स्कूल की बगल में, मुजेसर (फरीदाबाद)।
4. देशराज (कालू) का मकान, तालाब के पास, रामपुरा, गुड़गाँव।
5. कमरा नं. 25 लक्खीराम का मकान, गली नम्बर–6, कापसहेड़ा, दिल्ली। 6. 71 सरकारी स्कूल वाली गली (ए टू जैड टेलर के सामने), सराय ख्वाजा, फरीदाबाद।

गुड़गाँव में मजदूर

मैक एक्सपोर्ट मजदूर : "143 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3600-3800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सुबह 8 से रात 10 की ड्युटी। रविवार को रात 8 बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मैनेजर बहुत गाली देता है, थप्पड़ मार देता है।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : "195, 196, 205, 206 उद्योग विहार फेज-1 तथा 292 फेज-2 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को सितम्बर की तनखा 20-22 अक्टूबर को दी। कैजुअलों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से भी कम – 11 से 16 रुपये प्रति घण्टा, और भुगतान देरी से – अगस्त के पैसे 10 अक्टूबर को दिये, सितम्बर के आज 26 अक्टूबर तक नहीं। कैजुअलों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। फण्ड के पैसे तो स्थाई हो चाहे कैजुअल, भविष्य निधि कार्यालय में रिश्वत दिये बिना नहीं निकलते।"

वीवा ग्लोबल कामगार : " 413 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये मार्च में हम 30 सिलाई कारीगरों को पीस रेट पर रखा था। गेट पर 25 अगस्त को हमें रोक कर ठेकेदार को बुलाया और बिल देने को कहा था। अगस्त में किये काम के एक-सवा लाख रुपये हमें आज 26 अक्टूबर तक नहीं दिये हैं..... कम्पनी कह रही है कि पैसे नहीं देगी क्योंकि हम ने हड़ताल की जिससे बायर टूट गये..... जबकि, हमें तो कम्पनी ने स्वयं निकाला था – कम्पनी का झगड़ा तो 100 स्थाई मजदूरों से था। यूनियन और मैनेजमेन्ट की खींचातान में 23 अगस्त से 100 स्थाई मजदूर फैक्ट्री के बाहर धरने पर बैठे थे और 40 स्थाई मजदूर अन्दर काम करते रहे थे। मामला श्रम विभाग में है, तारीखें पड़ रही हैं, मजदूर धरने से उठ गये हैं। जो 40 अन्दर थे उन्हें फैक्ट्री बन्द कर रहे हैं कह कर 1 अक्टूबर को कम्पनी ने हिसाब दे दिया। जो 100 मजदूर यूनियन में थे उन में से 35 को दस हजार रुपये अतिरिक्त हिसाब में दे कर कम्पनी ने तोड़ लिया। तीस महिला और 35 पुरुष मजदूर यूनियन में बचे हैं। फैक्ट्री में उत्पादन बन्द है, स्टाफ ड्युटी पर है।"

चेल्सिया मिल्स वरकर : " 360 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से साँय 5½ की शिफ्ट है पर रात 9 बजे तक काम करना पड़ता है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर देरी से – सितम्बर की तनखा 21 अक्टूबर को दी। जबकि, आधा घण्टा देरी से पहुँचने पर 4 घण्टे के पैसे काट लेते हैं। यहाँ काम करते 450 मजदूरों में 100 की ही ई.एस.आई व पी.एफ. हैं। यहाँ मुख्यतः गैप का माल बनता है।"

एस एण्ड बी इन्टरनेशनल मजदूर : "669-670 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में काम करते 150 मजदूरों में 30 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और इन 30 को ही बोनस देते हैं। महीने में 70-80 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और गड़बड़ कर एक-दो दिहाड़ी खा भी जाते हैं।"

माइक फिल्टर श्रमिक : "88 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर, 12 घण्टे की शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से। सितम्बर की तनखा 22 अक्टूबर को दी..... पर सुरक्षा कर्मियों को अगस्त तथा सितम्बर की तनखायें आज 26 अक्टूबर तक नहीं दी हैं। गार्ड **अस्मत सेक्युरिटी** के जरिये रखे हैं और विवाद के कारण ठेकेदार को कम्पनी भुगतान नहीं कर रही।"

भारत इन्टरप्राइजेज कामगार : "189 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकर चमड़े के जैकेट बनाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3300-3500 तथा ऑपरेटरों की 4000 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम दुगुनी दर से।"

सरगम, 152 फेज-1, ई.एस.आई. कार्ड के लिये 100 रुपये, 1000-2000 उधार लेना, सोसाइटी चलाना अधिकारियों के अतिरिक्त हथकण्डे; **पर्ल,** 274 फेज-2, पानी की समस्या; **ई ई एल,** 508 फेज-3, ठेकेदारों के जरिये रखों की 12 घण्टे ड्युटी, ओवर टाइम सिंगल रेट, बोनस नहीं, दिवाली पर मिठाई भी नहीं; **कैलाश रिबन,** 403 फेज-3, जुलाई से देय डी.ए. के 134 रुपये नहीं दिये हैं;.....

आई एम टी मानेसर

जे एन एस इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : " प्लॉट 4 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में प्रिन्टिंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों और अन्य विभागों में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्टों में **हीरो होण्डा, यामाहा, सुजुकी, बजाज, मारुति सुजुकी, महिन्द्रा** वाहनों के मीटर तथा स्टार्टिंग चाबी बनते हैं। बड़ी फैक्ट्री है, महिला मजदूर 19 बसों में आती-जाती हैं और उनकी दिन की शिफ्ट ही है। अधिकतर मजदूर तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और तनखा देरी से – स्थाई मजदूरों तथा स्टाफ को तो जुलाई की तनखा अगस्त की तनखा के साथ 15 सितम्बर को दी। प्रिन्टिंग विभाग में प्रोडक्शन मैनेजर बहुत गाली देता है, पीटता भी है। भोजन अवकाश के समय भी मशीनें चलती रहती हैं, कैन्टीन में बारी-बारी से खाते हैं। भोजन में कच्ची-जली रोटियाँ..... पर 18-19 अक्टूबर को भोजन सही था – रोटी में लगा घी, सब्जी में धनिये के पत्ते और टमाटर। जापान से साहबों का आना..... दस दिन पहले से पूरी फैक्ट्री में सफाई..... वे 18 अक्टूबर को आये तब खराब मशीन को चलती दिखाने का नाटक भी हुआ।"

ई आर ऑटोमोटिव्ज श्रमिक : "प्लॉट 184 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **सोनालिका** ट्रैक्टर के गियर, **हीरो होण्डा** मोटरसाइकिल की शीट पाइप तथा ब्रिटेन को निर्यात के लिये हाइड्रोलिक बोल्ट आदि का उत्पादन करते हैं। रविवार को 8 घण्टे काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। बारह घण्टे बाद रोकते हैं तो लगातार 36 घण्टे की ड्युटी हो जाती है और तब 50 रुपये रोटी के लिये देते हैं। स्थाई मजदूर 50-60 हैं और 450 को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है। जुलाई से देय महँगाई भत्ते के 134 रुपये नहीं दिये हैं। गाली देते हैं। पीने के पानी की बहुत दिक्कत है। शौचालय गन्दे रहते हैं।"

पैकमैन कामगार : " प्लॉट 28-29 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में इन्जेक्शन मोल्डिंग का कार्य। भोजन अवकाश के समय भी मशीनें चलती रहती हैं, 24 घण्टे चलती हैं, महीने के तीसों दिन चलती हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से जबकि कागजों में दुगुनी दर दिखाते हैं। यहाँ **होण्डा** तथा **रान्धार लोकिंग डिवाइस** के माध्यम से **हीरो होण्डा** के पुर्जे बनते हैं। छोड़ने पर फण्ड का फार्म भर देते हैं पर 'पैसे जमा नहीं' की टिप्पणी के साथ फार्म वापस आ जाता है।"

इण्डोरेन्स टैक्नोलॉजी वरकर: "प्लॉट 400-401 सैक्टर-8 स्थित फैक्ट्री में 1000 से अधिक मजदूर तीन शिफ्टों में **होण्डा, सुजुकी, माइको, बॉश** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। पिछले वर्ष स्थाई मजदूरों ने 1000-1000 और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों ने 500-500 रुपये चन्दा दिया। यूनियन बनी। स्थाई मजदूरों की तनखा 3600 रुपये बढाई, कैन्टीन कूपन 17 की जगह 11 रुपये का किया गया, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को मात्र जूते मिले..... यूनियन बनते ही कम्पनी ने लाइन चला कर उत्पादन बढा दिया। काम का पूरा बोझ ठेकेदारों के जरिये रखे 900 मजदूरों पर पड़ा – 150 स्थाई मजदूर सामान्यतः काम करवाते हैं, स्वयं कम ही करते हैं।"

हीरो मोटर मजदूर : "प्लॉट 61 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में पावर प्रेस तथा मिग वैल्डिंग का कार्य होता है। प्रेस ऑपरेटर की तनखा 4500 रुपये, ओवर टाइम सिंगल रेट से। उत्पादन के लिये भारी दबाव, गाली बहुत देते हैं। पहले **रैपरो ऑटो** नाम था तब बोनस, सवेतन छुट्टी, 12 घण्टे बाद रोकने पर रोटी के लिये 30 रुपये देते थे – वर्ष हो गया है हीरो मोटर नाम हुये और यह सब बन्द कर दिये हैं।"

वेन्टेज श्रमिक : " प्लॉट 5 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में धागे काटती 12 महिला मजदूरों को 9-10 घण्टे प्रतिदिन कार्य पर 30 दिन के 4000-4200 रुपये। कम्प्युटर तथा हाथ से कढाई करते 90 पुरुष मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 4800-5200 रुपये। तनखा देरी से, 18-19 तारीख को। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं।"

टालब्रोस मजदर : " प्लॉट 51 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 80 स्थाई मजदूर और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 400 से **(बाकी पेज चार पर)**

दिल्ली में मजदूर

अगस्त से देय मँहगाई भत्ता (डी ए) की घोषणा दिल्ली सरकार द्वारा नवम्बर आरम्भ तक नहीं। अकुशल श्रमिक 5272 रुपये (8 घण्टे के 203 रुपये); कुशल श्रमिक 6448 रुपये (8 घण्टे के 248 रुपये)। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता: श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054

सोनू प्रिन्टर्स मजदूर : "बी-82 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। एक रंग की छपाई वालों की प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी है और महीने में आठ-दस रोज 36 घण्टे लगातार काम। चार रंग की छपाई वालों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और महीने में दो रविवार छुट्टी तथा दो रविवार 24-24 घण्टे काम। ओवर टाइम का भुगतान सवा की दर से।"

डीटेल्स श्रमिक : "डी-30 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 400 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 की ही हैं। चाय के लिये कोई समय नहीं देते, सुबह 9½ काम आरम्भ करते हैं और 1½ से 2 भोजन अवकाश के बाद साँय 6 तक लगातार काम। धागे काटने वाले, इस्त्री करने वाले खड़े-खडे काम करते हैं, पाँव सूज जाते हैं। प्रति घण्टे का उत्पादन निर्धारित है। रात 8¼ अथवा 9 बजे छूटते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **डोरोथी, परकिन्स, नेक्स्ट, जॉर्ज** का माल बनता है। पुरुषों के लिये मात्र 3 शौचालय हैं, लाइन लगी रहती है।"

श्री साँई प्रिन्टिंग प्रेस कामगार : "ए-133 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000-3500, फीडरमैन की 4500 और ऑपरेटरों की 5000-6000 रुपये। ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। शिफ्ट सुबह 9 से रात 9 की है और महीने में 15 रोज अगली सुबह 9 बजे तक काम। महीने में 15 बार लगातार 36 घण्टे काम करना पड़ता है। रविवार की छुट्टी रहती है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। छत्तीस घण्टे रोकते हैं तब रोटी के लिये 35 रुपये देते हैं। शौचालय गन्दा। फोरमैन बहुत गाली देता है।"

मुलतानी फार्मास्युटिकल्स वरकर : " सी-100 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में आयुर्वेदिक दवाइयाँ बनाते 50 मजदूरों की तनखा 3000-4500 रुपये। ड्युटी सुबह 9 से साँय 7 की। ओवर टाइम मात्र 10 रुपये प्रतिघण्टा। बोनस में 2000-2200 रुपये ही देते हैं।"

रतना ऑफसैट मजदूर : "सी-99, 101, 102 डी डी ए शेड्स ओखला फेज-1 स्थित कम्पनी में हैल्परों की तनखा 3000-3500 और इंकमैन तथा असिस्टेन्ट की 3500-4200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। चोट लगने पर मजदूर अपने पैसों से उपचार करवाये, मशीन में हाथ आने पर निकाल देते हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं है। शौचालय बहुत गन्दा – फैक्ट्री के बाहर जाते हैं..... सफाईकर्मी दस फैक्ट्रियों में काम करता था। उसने पैसे माँगे तो दिये नहीं। अगले रोज अपने साथियों के साथ फैक्ट्री पहुँचा तब पैसे दिये। एक महीने से सफाईकर्मी फैक्ट्री नहीं आता।"

आई एम टी मानेसर (पेज तीन का शेष)

ज्यादा वरकर हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से, बाकी को सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. सब के काटते हैं पर छोड़ने पर फण्ड के पैसे कुछ को ही मिलते हैं।"

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर कामगार: " प्लॉट 1-2 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में दिवाली पर भी दुभान्त..... 1800 स्थाई मजदूरों को एक-एक किलो सूखे मेवे और ठेकेदारों के जरिये रखे 6500 मजदूरों को आधा-आधा किलो सूखे मेवे।"

ट्रैक कम्पोनेन्ट्स वरकर : " प्लॉट 21 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में पावर प्रेस विभाग में एक अधिकारी उधार के नाम पर मजदूरों से पैसे लेता है और फिर लौटाता नहीं। साहब दारू की पार्टी भी लेता है। कम्पनी ने पावर प्रेसों के सुरक्षा उपकरण मँगवा तो लिये हैं पर उन्हें लगा नहीं रहे। हाथ कटने का खतरा हर समय बना रहता है। दिन में 10½ घण्टे काम के बाद रोकने पर रोटी के लिये 20 रुपये देते थे पर इधर वे बन्द कर दिये हैं। सितम्बर की तनखा 14 अक्टूबर को दी तब कई मजदूर नौकरी छोड़ गये। अब मजदूर कम हैं इसलिये जबरन 14 घण्टे तो रोज रोकते ही हैं, 17-19 घण्टे भी रोक लेते हैं। दिन वाले सुबह 7 से रात 2 तक काम करने के बाद फैक्ट्री में सोयें और सुबह 7 बजे से फिर काम करें। रात वालों की 11½-13½ घण्टे की ड्युटी है। माल का स्टॉक बिलकुल नहीं है, हर रविवार को भी काम करवाते हैं। ओवर टाइम के जो घण्टे होते हैं उन्हें आधा कैर-दुगुनी दर से भुगतान दिखाते हैं।"

'बिना नाम की कम्पनी' श्रमिक : " प्लॉट 244 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में वाहनों के पुर्जे तैयार करते 70 मजदूरों की तनखा 4000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

रुपये का उत्पादन...

(पेज एक का शेष)

●फैक्ट्री की स्थापना व संचालन में लगे पैसों का लगभग 15 प्रतिशत शेयरों से आता है। बैंक, बीमा, म्युचुअल फण्ड के संग हजारों लोग शेयर होल्डर होते हैं। निदेशक मण्डल के तहत चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर-मुख्य कार्याधिकारी कर्ता-धर्ता की भूमिका में हैं। जबकि, जनरल मैनेजर-प्रबन्धक-सुपरवाइजर दैनिक संचालन की भूमिका निभाते हैं। डायरेक्टर अथवा मैनेजर बनने और बने रहने के लिये बहुतों को साधना पड़ता है, मन-विवेक तो गिरवी रखना पड़ता ही है। इसलिये मात्र वेतन व कोठी-कार के लिये शायद ही कोई साहब बने। हेराफेरियों के जरिये साहब लोग मजदूरों द्वारा फैक्ट्री में पैदा किये रुपये का 10-15 प्रतिशत हड़पते हैं। यह कम्पनी की चोरी होती है। चेयरमैन से मैनेजर वाला सम्पूर्ण मैनेजमेन्ट तन्त्र एक मजदूर द्वारा पैदा किये 50 हजार से दो लाख रुपये प्रतिमाह गुपचुप निकाल लेता है। इधर एक फैक्ट्री को हजारों फैक्ट्रियों का स्वरूप दिये जाने ने टैक्स चोरी को भी नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया है। सरकारी तन्त्र सरकार को चूना लगाने में सक्रिय है – मन्त्री से सन्तरी तक का सरकारी तन्त्र मैनेजमेन्टों की टैक्स चोरी में हिस्सेदार है। स्विस बैंकों में गोपनीय खाते तो इस छोटी लूट की एक अभिव्यक्ति मात्र हैं।

●फैक्ट्री उत्पादन की बिक्री के लिये प्रचार और व्यापार क्षेत्र उत्पादन का लगभग दस प्रतिशत लेता है। फैक्ट्री में एक मजदूर द्वारा पैदा किये 50 हजार से डेढ लाख रुपये प्रतिमाह प्रचार और व्यापार क्षेत्र लेता है।

●उपरोक्त मिल कर करीब नब्बे प्रतिशत बनता है। फैक्ट्री में एक मजदूर द्वारा प्रतिमाह इस राशि से अधिक का उत्पादन होता है तभी मुनाफा हुआ कहते हैं। एक मजदूर ने प्रतिमाह 4½ से 13½ लाख रुपये से कम का उत्पादन किया तो घाटा हुआ कहते हैं। चलती-बढती कम्पनियाँ इस प्रकार फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा पैदा किये जिस आठ-दस प्रतिशत को लेती हैं उसे लाभ कहा जाता है। इस "लाभ" का एक हिस्सा शेयर होल्डर डिविडेन्ड में लेते हैं और एक हिस्सा कम्पनी के विस्तार में लगता है।

●मजदूर को कितना मिलता है ? दिल्ली के इर्द-गिर्द फैक्ट्री मजदूर की तनखा आज तीन हजार से पच्चीस हजार रुपये है (कम्प्युटर क्षेत्र में कुछ की 50-60 हजार रुपये तक)। महीने में 5 से 15 लाख रुपये का उत्पादन करने वाले मजदूरों को महीने में 3000 से 25,000 रुपये। आप 5 से 10 मिनट जो काम करते हैं वह आपकी दिहाड़ी के रुपये पैदा कर देता है। भाप-कोयले की मशीनों से कार्य करते हमारे पुरखों का शोषण एक सौ-दो सौ प्रतिशत के दायरे में था। इलेक्ट्रोनिक्स के दौर में सी एन सी मशीनें चलाते फैक्ट्री मजदूरों का शोषण चार-छह हजार प्रतिशत के दायरे में है।

फिर भी कम्पनियों का दिवालिया होना, बैंकों का डूबना, सरकारों का कर्ज में धँसते जाना..... इसकी चर्चा फिर कभी करेंगे।

हम पीछे नहीं लौट सकते। वर्तमान में हमारे हस्तक्षेप हमारे आज तथा निकट भविष्य को सीधे-सीधे प्रभावित करते हैं। इसलिये आज क्या-क्या करें और क्या-क्या नहीं करें इस पर व्यापक आदान-प्रदान करना तो बनता ही बनता है।

(उपरोक्त में कच्चा माल, मशीन घिसाई, ईंधन की चर्चा नहीं है। यह रूपान्तरण के दायरे में आते हैं इसलिये उपरोक्त गणना-विश्लेषण में इनका स्थान नहीं है। मजदूर की दिहाड़ी मुद्दे को उभारने के लिये है।)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011